ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 348

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

शिक्षित महिलाओं पर दूरदर्शन का प्रभाव

संयुक्ता कुमारी
एम0ए0, पी–एच0डी0, समाजशास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received- 24.11.2019, Revised- 28.11.2019, Accepted - 03.12.2019 E-mail: - drbrajeshkumarpandey@gmail.com

सारांश : वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में तेजी से सुधार हो रहा है। आज महिला शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। माता–पिता भी अपने लड़कियों के शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं। यही कारण है कि आज बड़े संख्या में लड़कियाँ न केवल विद्यालय में बल्कि कॉलेज एवं विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में नौकरी कर रही हैं। आज महिलाएँ सभी तरह के व्यवसायों में कार्यरत हैं।

कुंजीभूत शब्द– वैष्णव भक्ति, सगुणात्मक, विग्रह, कल्पना, नीलोत्पल वर्ण, चतुर्भुजधारी, पुण्डरीकाक्ष, अंधकार।

शिक्षित महिलाएँ जनसंचार साधनों का भरपूर उपयोग कर रही है। जनसंचार साधनों में रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल, इंटरनेट का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षित महिलाएँ इन सभी साधनों का उपयोग कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त कर रही हैं।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षित महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्तिक, वेशभूषा, खानपान आदि की जानकारी जनसंचार के माध्यम से कर रही हैं।

अध्ययन का उद्देश्य– उच्च शिक्षारत छात्राओं पर जनसंचार साधनों के प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना। अध्ययन का क्षेत्र प्रस्तुत अध्ययन के लिए श्री अरविंद महिला कॉलेज, पटना का चयन किया गया।

निदर्शन : श्री अरविंद महिला कॉलेज, पटना से विभिन्न स्नातकोत्तर विभागों में अध्ययन कर रहे 200 सौ छात्रों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से किया गया है।

प्रविधि– प्राथमिक आँकड़ों का संकलन करने के लिए अनुसूचित विधि का प्रयोग किया गया है। तथ्यों का वर्गीकरण साधनीयन एवं विश्लेषण प्राथमिक तथ्यों का वर्गीकरण, साधनीयपन एवं विश्लेषण किया गया। परिणाम अध्ययन से प्राप्त तथ्यों से निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षारत छात्राएँ टेलीविजन देखती है। अधिकांश उत्तरदात्रियों के पास रंगीन टेलीविजन है। अधिकांश उत्तरदात्रियाँ इंटरनेट का प्रयोग करती हैं तथा इंटरनेट एवं टेलीविजन पर विभिन्न कार्यक्रम के अतिरिक्त शिक्षित कार्यक्रम को देखती हैं। उत्तरदात्रियों ने स्वीकार किया कि शैक्षिक कार्यक्रमों से उसके ज्ञान में वृद्धि हुई है। इंटरनेट एवं टेलिविजन के प्रभाव के कारण उत्तरदात्रियों में सहयोग की भावना का विकास हुआ है। उत्तरदात्रियों ने कहा कि उनपर टेलीविजन और इंटरनेट का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उत्तरदात्रियों ने कहा कि जनसंचार साधनों से सामाजिक समस्याओं का निराकरण हो सकता है। उत्तरदात्रियाँ मोबाइल का प्रयोग भी करती हैं।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उत्तरदात्रियाँ रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट आदि का प्रयोग करती हैं तथा इन संचार माध्यमों के द्वारा भी वे शैक्षणिक कार्यक्रमों का उपयोग करती है, जिससे उनकी ज्ञान में वृद्धि हुई है। उत्तरदात्रियों का मानना है कि जनसंचार के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न हुई है। इन साधनों के द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्रों के भूमि के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। इन साधनों में उनमें राजनीतिक आकाँक्षा राजनीतिक सलाकार प्रदान किया है। छात्राओं ने इस बात का स्वीकार किया कि जनसंचार साधनों का समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है तथा चोरी, भ्रष्टाचार, अश्लीलता, मद्यपान, नशा तथा भ्रष्टाचार को उत्पन्न करने में इनकी अहम भूमिका रही है। छात्राओं का कथन है कि जनसंचार साधनों से जनसंख्या वृद्धि का निराकरण हो सकता है तथा सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। उत्तरदात्रियों ने जनसंचार माध्यमों से रोजगार के अवसर की जानकारी प्राप्त होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लुण्डवर्ग, रोग और लारसन, सोसियोलॉजी, न्यूयार्क हारपर एण्ड रा पब्लिशर्स, 1954, पृ0–227.
2. ओटो एन लारसन : सोशियोलॉजी, न्यूयार्क हारपर एण्ड रा पब्लिशर्स 1984, पृ0–81.
3. राईट सी आर मास कम्यूनिकेशन ए सेप्टिपालीकल

*****